हिन्दी विभाग
स्नातक खंड:- III
पत्र संख्या:- VIII

दिनांक 21/08/2020

भारत-दुर्दशा: भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

कथोपकथन पर विचार करें?

उत्तर:- भारतेन्दु युग नवजागरण काल का प्रवेश द्वार तथा साहित्यिक खड़ी बोली हिन्दी का प्रवर्तन काल है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हिन्दी नवजागरण की प्रथम मंज़िल के सबसे प्रमुख लेखक हैं जिन्हें युग-प्रवर्तक का श्रेय जाता है। भारतेन्दु जी उन युग प्रवर्तकों में से जाने जाते हैं जिनके व्यक्तित्व के माध्यम द्वारा ऐतिहासिक बिखरी हुई शक्तियाँ सिमट कर एक हो जाती है और भविष्य निर्माण के लिए एक सुनिश्चित और सुदृढ़ समन्वयात्मक मार्ग की उत्पत्ति करती है। भारतेन्दु जी प्रगतिशील चेतना के प्रतिनिधि थे। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से दिग्भ्रमित हताश, निराश जनमानस को समर्थ नेतृत्व प्रदान किया जैसा कि 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' ने कहा है कि भारतेन्दु जी ने साहित्य को एक नया रास्ता दिखाया और उसे शिक्षित जनता के साहचर्य में ले आये। उनके सक्षम नेतृत्व में आलोच्य युग में साहित्य की लगभग प्रत्येक विधाओं, यथा - कविता, कहानी, निबंध, उपन्यास, नाटक, समालोचनां का प्रवर्तन होता है। हिन्दी के साहित्य को नए-नए विषयों की ओर ले जाने का श्रेय भारतेन्दु जी को जाता है।

युग संवेदना की समझ के अनुरूप ही भारतेन्दु जी ने गद्य का महत्व स्थापित किया। गद्य विधाओं में निबंध और नाटक को उन्होंने विशेष रूप से महत्व दिया और नवीन उन्मेष सम्भव किया। भाषा और साहित्य तत्कालीन जीवन के साथ तदाकार हो गए। नाट्य लेखन में इस युग में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई।

इस युग की भाषा व्यवहारोपयोगी तथा अपरिष्कृत थी किंतु उसमें जीवन का स्पंदन संचरित हो रहा था। भारतेन्दु जी जनता से सीधा संवाद स्थापित करने वाले लेखक थे। 'भारत दुर्दशा' और 'अंधेर नगरी' भारतेन्दु के नाटकों में विशेष महत्वपूर्ण हैं। इन दोनों नाटकों में भारतेन्दुजी ने भारत की तात्कालिक स्थिति का वर्णन बहुत ही सहज एवं सरल भाषा में किया है। अपने नाटकों के माध्यम से भारतेन्दु ने हिन्दी नवजागरण में एक नई जान फूंकी जो आज तक उसी प्रकार से पुष्पित पल्लवित हो रही है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र भारतेन्दु ही बन कर रह गये। उन्होंने हिन्दी साहित्य को उन ऊँचाइयों पर ले जाने का काम किया है उसको छू पाना आसान सबकी बात नहीं है।

हिन्दी नाट्य साहित्य के विषय वस्तु और रूप विन्यास में क्रान्तिकारी परिवर्तन उपस्थित कर दिया। भारतेन्दु ने साहित्य के सभी क्षेत्रों पर अपनी लेखनी चलाई है और साहित्य में एक नया अध्याय जोड़ने का प्रयास किया है किन्तु उनकी सम्पूर्ण प्रतिभा का दर्शन उनके नाटकों में ही परिलक्षित होता है। 'भारत दुर्दशा' नाटक केवल अंकयहीन ही नहीं है बल्कि इस नाटक के द्वारा देश चिन्तन या समाज चिन्तन पर भी विचार किया है। भारतेन्दु जी ने अपने नाटकों में समय के अनुरूप मध्यवर्ग की समस्याओं, प्रश्नों और प्रश्नों शंकाओं को स्थान दिया है। मध्यवर्ग के विद्रोह का प्रथम स्वर भारतेन्दु के नाटकों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। 'भारत दुर्दशा' में रईस, कवि, बंगाली,

महाराष्ट्रीय जैसे टाइप चरित्रों को चित्रांकित कर इन्होंने जन-तांत्रिक और मध्यवर्गीय चेतना का परिचय दिया है।

भारतेन्दु कृत 'भारत दुर्दशा' देश की राजनैतिक स्थिति का दैन्यपूर्ण चित्रण-सा प्रतीत होता है। इसमें भारतेन्दु जी का देश-प्रेम देखने को मिलता है और नाट्य हृदय की विद्रोहात्मक ज्वाला का विस्फोट रूप भी परिलक्षित होता है जिसमें देश-प्रेम की लहरें दिखाई देती हैं अनेकों राजनैतिक परिस्थितियों ने करवट बदली, किन्तु भारतीय संस्कृति को भी आँच नहीं आयी भारतीय संस्कृति का अस्तित्व ज्यों का त्यों बना रहा। 'भारत दुर्दशा' में भारतेन्दु जी ने भारतीय स्थिति की स्पष्ट व्याख्या की है, एवं उन्होंने स्वदेशी की भावना पर बल दिया और जीवन के अंतिम अवस्था तक उन्होंने राष्ट्रभक्ति से संबंधित अनेकों रचनाएं की जिनका अस्तित्व आज भी उसी तरह हिन्दी साहित्य में विद्यमान है 'भारत दुर्दशा' की जीवंतता समीक्षकों को अधिक सार्थक लगती है क्योंकि इस नाटकों में व्यंग्य ही नहीं देश चिन्तन या समाज विमर्श भी है। सांस्कृतिक दृष्टि से ये कृतियां आज भी संदेश का कार्य कर रही हैं। भारतेन्दु की समय और संवेदना दोनों दृष्टियों से तथा अपने अंतर्विरोधों के साथ विशेष अर्थ में आधुनिक कहे जा सकते हैं

वस्तुत: भारतेन्दु जी को एक जनवादी एवं राष्ट्रीय चेतना से सम्पन्न साहित्यकार माना जा सकता है। क्योंकि जिस राष्ट्रीयता का स्वर 'भारत-दुर्दशा' में दिखाई देता है वह कुछ हद तक भारतेन्दु की अपनी राष्ट्रीय प्रेम की कहानी को याद दिलाता है जिस राष्ट्रवादी चेतना का विकास भारत दुर्दशा में भारतेन्दु जी ने किया वह भारत को स्वतंत्र कराने में काफी हद तक काम किया।

प्रस्तुतकर्ता

बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राजनारायण महाविद्यालय हाजीपुर
(BRABU MUZAFFARPUR)

मो०नं० - 8292227104।
ईमेल — benamkumar13@gmail.com

दिनांक
21/08/2020